

सूचीपत्र ।

जनेऊ पदति	२)॥	पार्वण भा० टी०	३)	श्रीमद्भागवद्गीता भा० टी०	३)
मूल शान्ति	१)	अशौचनिर्णय	२)	दोहा सहित	२)
वासिष्ठी हवन पदति	३)॥	होम पदति	३)॥	श्रीमद्भागवद्गीता गुटका	१)
समंशक महशान्ति प्रयोग	॥)	हरद्वीमाह पूजा	॥॥	भा० टी०	१)
श्रीविस गायत्री	॥)	शानिरकर कथा	२)	गीता गुटका १२ पेजी	१)
पार्थिवपूजा भा० टी०	१)	यजुर्वेदी सन्ध्या भा० टी०	१)॥	सुदुर्लभं मंजरी भा० टी०	३)
निशिनर्णय	२)	सिद्धान्त पटल	३)	रत्नोप्यांत भा० टी०	३)
तर्पण	॥)	सामवेदी सन्ध्या	१)	" " सांची	१)
दशकर्म पदति	१२)	पिण्ड दर्पण अर्थात् गृह	१)	गर्भ गीता	१)
मेल मन्जरी मूल	१२)	भूषण भा० टी०	॥)	वैद्य रत्न	१२)
" " भा० टी०	॥)	विवाह पदति मूल	३)	गृहभूषण पिण्ड दर्पण	॥१)
पार्वण मूल	१)॥	" " भा० टी०	३)	शुद्धका पूर्वस्वप	॥१)

सूचीपत्र ।

अनन्त व्रत कथा भा० टी० =)॥	सूर्य पुराण	श्रीवदभगवत्गीता
अक्षयनवमी	ऋषिपंचमी व्रत कथा मूल)॥	पंचरत्न गुडका
गणेश पुराण	महाभारत सषलसिंह कुत ४)॥	तस्तबोध ।
कार्या माहात्म्य	सूर्य पुराण बड़ा साहज ॥)॥	योगवासिष्ठ
द्वित्रगुप्त कथा भा० टी० =)॥	पाकेट साहज " " १)	बेदान्तसार ।
प्रेमसागर	गरुडपुराण भाषा टीका १)	नारद गीता ।
बुजबिलास	एकादशी माहात्म्य	मीन गीता ।
विश्रामसागर	भाषा टीका " " १)॥	नित्य कर्म पद्धति
सत्यनारायण व्रत कथा मूल =)॥	भयाग माहात्म्य	एकोद्दिष्ट आद मूल
" " भा० टी० १)	रामचन्द्र केवट सम्पाद)॥	" " सटीक =)॥
संकटचतुर्थी मूल १)	श्रीमद्भगवत्गीता भा० टी० २)	गौदान १)
		गणपति पूजा ॥)॥

लघुदर्पण-कर्मकाण्ड ग्रन्थ ।

जिस पुस्तक की वर्षों से धूम मची हुई थी और भाँगें आरही थीं वही लघुदर्पण पुस्तक अब सुन्दर स्वच्छ कागज पर छपकर तैयार हो गई है। और भद्राधर विक रही है। इस कर्मकाण्ड के सम्पूर्ण विषयों को दर्पण ही समझिये जैसा नाम है, वैसा ही गुण। इसमें कर्मकाण्ड सम्बन्धी प्रायः सभी विषयों की बड़ी योग्यता के साथ विशद विवेचन किया गया है और उनकी पूरी विधि लिखी गई है। इसके—रचयिता हैं कर्मकाण्डी पं. जगन्नाथ मालवीय । इसका संशोधन भी काशी के प्रसिद्ध धर्मशास्त्री पं. गोपालशास्त्री ने ने, (व्याकरणाचार्य) और पं. अम्बिकाप्रसादशर्मा व्याकरणाचार्य ने किया है। पुस्तक की छपाई में शुद्धता का पूरा ध्यान रखा गया है। इस पुस्तक की पद्धति को काशी के प्रायः सब प्रसिद्ध पण्डितों ने (जिनके नाम ग्रन्थ में दिये गये हैं) स्वीकार कर इसकी प्रशंसा की है। अबतक इस विषय पर इससे अच्छी कोई पुस्तक नहीं निकली है।

पुस्तक मिलने का पता—

करी है और इसलोक में अपने पति के साथ बिलाय कर पुत्र पीत्रादिकों के संयुक्त रमणाय भोगों को भोग कर पाप से रहित हो अक्षय गति को पाती है ॥ १९ ॥ २० ॥

सर्वपापविनिर्मुक्तस्वर्गलोकमहीयते ॥ इहलोकैचिरंकालं
भर्त्रासहशुचिस्मिता ॥ १९ ॥ पुत्रैःपौत्रैःपरिवृताभुक्त्वाभो
गान्मनोहरान् ॥ निष्पापासुभगानित्यंलभतेचाक्षयंगतिम्
॥ २० ॥ इति उद्यापनाविधिः समाप्तः ।

बाह्य कार्याप्रसाद भार्गव द्वारा भार्गवभूषण प्रेष, चिलीवन-काशी में
मुद्रित तथा प्रकाशित किया ।

करै ॥ ९ ॥ मध्यान में श्रद्धापूर्वक भक्ति से पूजन करै ॥ १० ॥ कश्यप १ अत्रि २ भरद्वाज ३

विश्वामित्र ४ गौतम ५ जमदग्नि ६ वसिष्ठ ७ सांखी अरुन्धती ८ इन ऋषिर्षा की प्रतिमा पर

पंचवर्णैश्चफलपुष्पसमन्वितम् । बध्नीयादुपरिश्रीमत्सभारां

न्संविधायच ॥ ९ ॥ मध्याह्नेपूजयेद्भक्त्याऋषीञ्छुद्धासम

न्वितः ॥ कश्यपेतिभरद्वाजोविश्वामित्रोथगौतमः ॥ १० ॥ जम

दग्निर्वसिष्ठश्चसांखीचैवाप्यरुन्धती ॥ मन्त्रेणानेनराजेन्द्रकु

त्वापूजांसमाहितः ॥ ११ ॥ रात्रौजागरणंकुयार्त्पुराणश्रवणादि

श्रावाहन पूजन करै ॥ ११ ॥ रात्रिमें जागरण करै ॥ अर्घ्ये २ पराणों को सुनै फिर प्रातःकाल

स्नान करके तिब घृत का हवन करे ॥ १२ ॥ १ हजार श्राठ अथवा १ सौ ८ आहुति
 दे ॥ १३ ॥ फिर नत्कानेवाले अपने गुरु की पूजा करके वस्त्र आभूषण दे सुन्दर पक्व न
 भिः ॥ कृतानित्यक्रियः प्रातर्जुहुयात्तिलसापिषा ॥ १२ ॥ वैदिकोवा
 श्यपौराणं अधिकारान्मनुस्मृतः ॥ अष्टोत्तरसहस्रं वाशतमष्टो
 तरंतुवा ॥ १३ ॥ पुनः पूजांततः कृत्वा गुरुं संपूजयेत्त्वती ॥
 स्वर्णाङ्गुलीयवासोभिः कण्डलासुतभोजनैः ॥ १४ ॥ दद्या
 देकांसवत्सांचगुरवे गांपयास्विनीम् ॥ पूजयेद्दत्विजः सप्तवासा
 ब्राह्मणको भोजन करवे ॥ १४ ॥ एक दुधार गौ आचार्य को दे और होम करनेवालों को वस्त्र

शु० करै ॥ ९ ॥ मथ्यान में श्रद्धापूर्वक भक्ति से पूजन करै ॥ १० ॥ कश्यप १ अग्नि २ भरद्वाज ३

विश्वामित्र ४ गौतम ५ जमदग्नि ६ वसिष्ठ ७ साध्वी अरुन्धती ८ इन ऋषियों की प्रतिमा पर

३७

पंचवर्णांचफलपुष्पसमन्वितम् । बहनीयादुपादिश्रीमत्सभारां

न्संविधाय च ॥ ९ ॥ मथ्यान्हैपूजयेद्भक्त्याऋषीञ्छुद्धासम

न्वितः॥ कश्यपोऽग्निभरद्वाजोविश्वामित्रोथगौतमः ॥ १० ॥ जम

दग्निर्वसिष्ठश्चसाध्वीचैवाप्यरुन्धती ॥ मन्त्रेणानेनराजेन्द्रक

त्वापूजांसमाहितः ॥ ११ ॥ रात्रौ जागरणं कुर्यात्पुराणश्रवणादि

आवाहन पूजन करै ॥ ११ ॥ रात्रिमें जागरण करै ॥ अच्छे २ पुराणों को सुनै फिर प्रातःकाल

पूणपत्र कलशा पर धरै ॥ ६ ॥ उसके ऊपर अष्टदल कंकुम अबीरसे बनाव उस पर स्वर्ण प्रतिमा
शुभियों की रखे ॥ ७ ॥ एक पल प्रणाम की प्रतिमा अथवा आधा वा चौथाई पल शक्ति

नवा ॥ वंशमृन्मयपात्रेणयवचूर्णेनचैवाहि ॥ ६ ॥ आन्ध्र्या
दयेत्तंचैलेनालिखेदष्टदलंततः ॥ सौवर्ण्यःप्रतिमाकाष्ठीऋषी
णांभावितात्मनाम् ॥ ७ ॥ पत्तेनवातदर्धेनतदर्धाधिनवापुनः ॥
शक्त्यावाकारयेत्तत्रवित्तशाठ्यविवर्जितः ॥ ८ ॥ वितान

के अनुसार बनाव ॥ ८ ॥ पांच रंग का चंदवा मंडप में बांध के तोरण आदि से सुशोभित

करी ॥ ३ ॥ धर में गोबर से लीपि के सर्वतो भद्र मंडल बनवै उस पर तीस्र अथवा मट्टी के अन्धे कलश में जल पूरित रखै ॥ ४ ॥ कलश के कंठ में सफेद वस्त्र

कल्यासमान्वितः ॥ ३ ॥ शुचौदेशेसमालिप्यसर्वतोभद्रम-
ण्डले ॥ अक्षुण्णं जलं कुम्भं ताम्रं मृन्मयमेव वा ॥ ४ ॥ सं-
स्थाप्य वस्त्रसंवीतकण्ठदेशे शुभे नमः । पञ्चवरत्नसमायुक्तैः
फलान्धातुतैर्युतम् ॥ ५ ॥ साहिरपयोसमाच्छ्रायताम्रेण पटले

लपेटे और उसके भीतर पंचानन तथा सर्वौषधादि छोट ॥ ५ ॥ फिर नव भद्र के १

उसकी सुमति ने किस विधि से किया था सो भी कहिये ॥१॥ तब श्रीकृष्ण भगवान् बोले कि पहिले दिन १ बखत भोजन करे दूसरे दिन स्नान करके गुरु के घर जाय ॥ २ ॥ और गुरु से पूर्णफलप्रदम् ॥ सुमतिकेनविधिनाचकारवेदतत्त्वतः ॥ १ ॥

श्रीकृष्णउवाच ॥ पूर्वस्मिन्दिवसेकुथादेकभुक्तसमाहितः ॥
प्रातरुत्थायसुस्नातस्वतोगुरुगृहंबर्जेत ॥ २ ॥ प्रार्थयेत्सम-
साचार्योभवोद्यापनकर्माणि ॥ पूर्वोक्तैवविधिनास्नात्वाभ

प्रार्थना करे कि आप आचार्य होकर उद्यापन विधि से कराइये फिर विधि के अनुसार स्नान

धन यथा स्वर्ग तथा पुत्रादि सुख को देने वाला है । इसकी कथा सुनने से पाठ करने से प्राणी
मात्र का कल्याण होता है ॥ ७२ ॥ इति भविष्योत्तरपुराणोक्तश्रुषिपंचमीव्रतकथाभाषा

इत्यंयशास्यंस्वयं चपुत्रद्वैयुधिष्ठिर ॥ पठतांशुणवतांचापि
सर्वपापप्रणाशनम् ॥ ७२ ॥ इति श्रीभविष्योत्तरपुराणे
श्रुषिपंचमीव्रतकथासंपूर्णम् ॥

अथोद्यापनम् ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ किमस्योद्यापनं प्रोक्तं व्रत

टीकासम्पूर्णम् ॥

अथ उद्यापनविधिः । युधिष्ठिर बोले कि पंचमीके व्रतका पूर्ण फल देनेवाला उद्यापन क्या है

पंचमी के व्रत से प्राप्त होता है ॥ ६९ ॥ जो स्त्री इस व्रत को विधिवत् करती है वह अनेक सुख भोगकर पुत्र एवं पौत्र से सम्पन्न होती है ॥ ७० ॥ इस लोक में सुख भोग करके उत्तम गति को

चाराणात् ॥ ६९ ॥ कुरुतेयावृतंनारीसाभवेत्सुखभागिनी ॥

पलावणययुक्ताचपुत्रपौत्रादिसंयुता ॥ ७० ॥ इहलोकै

दैवस्यात्परत्रैचपरंगतिम् । एतत्तेकाशितंराजन्वतानामुत्त-

मंव्रतम् ॥ ७१ ॥ सर्वसम्पत्प्रदं चैव नारीणां पापनाशनम् ॥

प्राप्त होती है । हे युधिष्ठिर इस प्रकार ऋषिपंचमी व्रत तुमसे कहा ॥ ७१ ॥ यह स्त्रियों का

सुख तथा संपत्ति, एवं पुत्रपौत्रादि को देनेवाला और संपूर्ण पापों को नाश करनेवाला है, यह व्रत

इस व्रत के प्रभाव से प्राणी का स्वर्ग में वास होता है । मन वाणी का क्रिया जो पाप स्वर्गप्राप्तोमहाराज व्रतस्यास्यप्रभावतः॥काथिकंवाचिकंवापि मानसंयच्चदुष्कृतम् ॥ ६७ ॥ तत्सर्वंविलयंयाति व्रतस्यास्य प्रभावतः॥तस्ययज्जायतेपुण्यं तच्छृणुष्वनुपोत्तम ॥ ६८ ॥ सर्वत्रतेषुयत्पुण्यं सर्वतीर्थेषुयत्फलम् ॥ सर्वदानेषुदत्तेषुतदेतद्व्रत

होता है ॥ ६७ ॥ वह सब नाश होता है । हे युधिष्ठिर ! इस व्रत से जो बड़ा पुण्य होता है उसका फल सुनो ॥ ६८ ॥ संपूर्ण तीर्थ का फल संपूर्ण दान का फल संपूर्ण व्रतों का फल केवल इस

नाश करनेवाले ऋषिपञ्चमी के व्रत को यथोक्त प्रकार से करके सुमति ने उसका फल
अपने माता पिता को दिया ॥ ६४ ॥ हे धर्माज्ञ इस व्रत के पुण्यसे सुमति के माता पिता

शानम् ॥ कृत्वासन्नं यथोक्तं च मातापित्रोः फलं दद्वहौ ॥ ६४ ॥

व्रतपुण्यप्रभावेण मातातस्य श्वयोनितः ॥ मुक्तानुपतिशार्दूल

विमानकरसंस्थिता ॥ ६५ ॥ दिव्याम्बरधराभूत्वा गता स्वर्गं च

भारत ॥ पितृपिसमृते सुमतेः पशुयोनितः ॥ ६६ ॥

पशुयोनि से मुक्त होकर विमान पर बैठ के स्वर्ग को जाते भये । हे युधिष्ठिर सुन्दर दिव्य रूप
वंस्र धाए क्रिये लोकमें यश छोड़ कर ब्राह्मण और ब्राह्मणी स्वर्ग को गये ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

६१ ॥ हे सुमते इस प्रकार ऋषिपंचमी का व्रत करने से रजस्वला संपर्क जन्य दोष नाश होता है इसमें सन्देह नहीं है ॥६२॥ परमात्मा कृष्ण बोले कि ऋषियों के वाक्य को सुनके सुमति अपने वाक्य रून्धती ॥ संश्रेणानेनससर्षान्पूजयेत्सुसमाहितः ॥६१॥
 व्रतेनऋषिपंचम्याःकृतेनैवद्विजोत्तम ॥ ऋतुसंपर्कजोदोषः
 जयंयाति न संशयः ॥६२॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ तच्छ्रुत्वा
 सुमतिर्वाक्यं परमंऋषिभाषितम् ॥ गृहमेत्यव्रतंचक्रे सभा
 यः श्रद्धयान्वितः ॥६३॥ व्रतंतुऋषिपञ्चम्याः सर्वपापप्रणा

वा आकार के रथी समेत श्रद्धा पूर्वक उत्तम व्रत को करने लगे ॥ ६३ ॥ सम्पूर्ण पापों को

श्रावला आदि से केशको शुद्ध कर रनाम करके स्वच्छवस्त्र धारण कर ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

शुविनायचगात्राणंकुर्वेहं दन्ताधावनम् ॥ अनेन दन्तान्संशोध्य
स्नायान्मुत्स्नानपूर्वकम् ॥ ५८ ॥ तिलामलककल्केन केशान्संशो-
ध्ययत्नतः । परिधापनवे शुद्धे वाससीच समाहितः ॥ ५९ ॥ पूज-
यस्व ऋषीन् दिव्या न रुन्धत्या समन्वितान् ॥ कश्यपोत्रिभैरद्वा-
जा विश्रवामित्रोथ गौतमः ॥ ६० ॥ जमदग्निर्वासिष्ठश्च साध्वी चै-

शरुधती सहित सप्तऋषिका पूजन करे ॥ कश्यप १ अत्रि २ भरद्वाज ३ विश्रवामित्र ४ गौतम
५ जमदग्नि ६ वासिष्ठ ७ शरुधति ८ इन आठों का एकत्र चित्त से पूजन करो ॥ ६० ॥

भोजन व्रत में को ॥५३॥ अथवा कन्द मूल फल खाकर भाद्र शुक्ल पंचमी का व्रत करो ॥५४॥

३३

पद्मेससि शुक्लपक्षस्य पञ्चमीसु ॥५४॥ तस्यांसध्यान्हस
मये नद्यादौ विमले जले ॥ कृत्वा पासागंसमिधा दन्तधावन-
सादितः ॥५५॥ आयुर्बलं यशो वचः प्रजापशुवसूनि च ब्रह्मप्रजां
च मधांच त्वन्नो देहि वनस्पते ॥५६॥ संप्राप्त्या नि नमन्त्रेण कुर्याद्वि
दन्तधावनसु । मुखदुर्गन्धिनाशाय दन्तानां च विशुद्धये ॥५७॥

मध्यान्हकाल में नदी के तट पर जाकर आयुर्बलं० इस मंत्र से चिचिड़ा की १० दंतुअन करको ॥५५॥

और पिता भी उसी के पाप से वैश्यानि को प्राप्त भये इनके मुक्ति के लिये ऋषिपंथमी का बलीवर्दीवभूवह ॥ एतयोर्मुक्तिकामार्थं कुरुस्वऋषिपंच

॥५१॥ भार्यायासहविप्रेन्द्रऋषीन्संपूज्ययत्नतः ॥ आचरस्व
ब्रतं तत्र सप्तवर्षाद्विजोत्सम ॥ ५२॥ अन्ते चोद्यापनं कुर्याद्वि
शाठ्यं विवर्जितः ॥ शाकाहारस्तु कर्तव्यो निवारैः श्यामकैस्त
था ॥ ५३॥ कन्दैर्वाथ फलैर्मूलेहलक्षुण्णभक्षयेत् ॥ प्राप्यभ

व्रत करो ॥ ५१ ॥ अरुन्धनी सहित सप्तऋषि का सात वर्ष पर्यन्त स्त्री सहित पूजन करो ॥५२॥
बाद उद्यापन करो । सर्वाँ (तिन्नी) का धावज बिना जोते बोए जो वस्तु उत्पन्न होती हो उसका

के त्रिकालज्ञ ऋषि बोले ॥ ४८ ॥ तव सुमति से उसने माता पिता की मक्ती के लिये यह वचन
 स्तस्यसुमतेर्दुःखितस्य च ॥ ऋषिःसर्वतपानाम सर्वज्ञःकरु
 णान्वितः ॥ ४८ ॥ सुमतिंप्रत्युवाचेदं तत्पित्रोर्मुक्तये तदा
 ॥ ऋषिरुवाच ॥ तव माता पुराविप्र स्वगृहे बालभावतः ।
 ॥ ४९ ॥ प्राप्तंऋतुंभिदित्वातु संपर्कमकरोद्द्विज ॥ तेनकर्म
 विपाकेन शुनियोनिमुपागता ॥ ५० ॥ पितारिस्पर्शादोषेण

बोले, ऋषि बोले कि हे विप्र ! तेरी माता ने पूर्वजन्म में अपने घर में अज्ञानता से ॥ ४९ ॥
 मासिकधर्म होने पर स्पर्शास्पर्शा का विचार नहीं किया उसी दुष्कर्म से वह कुतिया भई ॥ ५० ॥

वन में तेजपुत्र सप्तऋषियों का दर्शन भया ॥ ४५ ॥ उनको नमस्कार करके कहा कि हे तेजोः
राशि ऋषि लोग हमारे दुःख को एकाग्र होकर सुन उसके उद्धार का उपाय ही सो कहा ॥ ४६ ॥

प्रणिपत्या ब्रवीद्वाक्यं हितं चैव तदा तयोः ॥ सुमतिरुवाच ॥ कथ
यश्चं विपद्यः प्रह्नमेकं समाहिताः ॥ ४६ ॥ केन कर्म विषया
केन पितरौ मे तपोचनाः ॥ इमा मवस्थां संप्राप्तौ भो द्यते
पातकात्कथम् ॥ ४७ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ तदाकर्ण्य वच

हे तपोधन किस पाप के कारण मेरे माता पिता पशुजन्म को प्राप्त भये और अब उनका उद्धार किस
उपाय से होगा सो कहिये ॥ ४७ ॥ श्रीकृष्ण धर्मराज से बोले कि सुमति का ऐसा दीन वचन सुन

शु०

सुनकर ॥ ४२ ॥ यह मान लिया कि हमारे यही माता पिता हैं तब उनको उसी समय भोजन

३०

विदित्वा तु दत्तवान्सुमतिस्तदा ॥ तस्यां राज्ञ्यां तत्कालं
ददौ ताभ्यां च भोजनम् ॥ ४३ ॥ तदाऽसौ दुःखितः पुत्रो
ज्ञात्वाऽवस्थां तथा तयोः ॥ मातापित्रोऽस्तुराजैश्च हुतं संभ
रिथ तो वनम् ॥ ४४ ॥ ज्ञातुमिच्छामि वै कष्टमिति निश्चित्य भार
त ॥ तत्र गत्वा ज्ञानवृद्धान् ऋषीन् परमथामिं कान् ॥ ४५ ॥

कराया ॥ ४३ ॥ और अत्यन्त दुखी हुए और मन में संकल्प किया कि बिना माता पिता
का उद्धार किये। अन्न न खायेगे ऐसा विचार तत्काल बन श्री चले गये ॥ ४४ ॥ हे युधिष्ठिर

३०

पं०

जन्म लेकर हमको भी बोझा दोना पड़ता है हम भी अशक्त हैं क्योंकि आज हमारा भी दिन

ह्यशक्तोऽहं भारवाहत्वमागतः । अद्याहमात्मनः श्रेत्रवाहि
तः सकलंदिनम् ॥ ४० ॥ मारितश्चात्मज्ञेनाहं मुखंबद्ध्वा
बुभुक्षितः ॥ वृथाश्राद्धकृतंतेन जाताऽद्यममकष्टता ॥ ४१ ॥
कृष्णउवाच । तयोःसंवदतोरेवं मातापित्रोश्चभारत ॥ श्रुत्वा
पुत्रस्तथावाक्यं यदुक्तं च तद्दोभयोः ॥ ४२ ॥ पितरौतौ

भर मुख बांध करके मार मार के दिन भर हर में जाता है इसने वृथा श्राद्ध किया ॥४०॥४१॥
श्रीकृष्णभगवान् बोले कि हे युधिष्ठिर सुमति ने अपने माता का परस्पर यह बातें कही हूये

केवल इतना ही है कि पक्वान्न जो ब्राह्मण भोजन के लिये रखा था उसमें सर्प ने दिया । यह देख के उससे न बचाती तो ब्रह्महत्या होती इससे जाकर छू दिया तब हमारी पत्नी ने
 ३७ ॥ सयाविचिन्त्यमनसा मरिच्य
 ह्यगर्लंसर्पसंभवम् ॥ ३७ ॥ सयाविचिन्त्यमनसा मरिच्य
 न्तिद्विजोत्तमाः ॥ संस्पृष्टपायसंगत्वा वध्वाऽहंताडिवा
 शम् ॥ ३८ ॥ दुःखितंतेनमेगात्रं कटिर्भग्नाकरोमिकिम् ॥
 ततःप्राहसचानड्वान् भद्रेतेपापसंग्रहात् ॥ ३९ ॥ किंकरोमि

जलनी लफ्डी से मारा । ३७।३८॥ इससे हमारे शरीर में बड़ी पीड़ा है । कुतिया क यह बचन सुन के बैल बोला कि यह पूर्वजन्म के पाप से दुःख होता है । ३९॥ देख तेर पाप से ही बैल का

जब अर्धांगि का समय आया तब कृतिया लधा के मारे दुखी हो ॥ ३४ ॥ वैजलरुपी पति के
 तत्पराश्रयप्रवृत्तायां सशुनीक्षुधिताभुशाम ॥ ३४ ॥ बली
 वर्द्धमुपागत्य भर्तारसिद्धमब्रवीत् ॥ बुभुक्षितोऽद्यहं भर्तृर्नदत्तं
 भोजनादिकम् ॥ ३५ ॥ प्रासादिकं च न प्राप्तं क्षुधामांवाधते भू-
 शाम ॥ अन्यस्मिन्दिवसे पुत्रो मम लेह्यं ददात्यसौ ॥ ३६ ॥
 अहमहं किमप्येष उच्छृष्टमपिनोददौ ॥ पायसे निपपाता

गीस जाकर कहने लगी कि हे नाथ आज मैं भूखी कलपरही हूं आज हमको जठा तक नहीं मिला
 मेरा पुत्र श्रीरामदिन तो प्रासाद देता था ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ आज वह भी नहीं दिया। हमारा दोष

के खाने से ब्राह्मण पर जायगे और दया होगी ऐसा विचार के छु दिया ॥ ३१ ॥ चन्द्रावती ने यह देख उस कुतिया को खलती हुई लकड़ी से मागा कि उसकी कम्म दूद गई। फिर चन्द्रावती ने भोजन की हिज भायांचतां दृष्टवा उलसुकेन जवानह ॥ भागडादी निच पत्तालयकत्वापाकं सुमध्यमा ॥ ३२ ॥ पुनः पाकं चकृत्पातु शिंङ्कृत्वा विधानतः ॥ ततो भुंक्तेषु विभेषु चोच्छ्रिं च ददौ बहिः ॥ ३३ ॥ भूमौ क्षिपंतयाशून्या उपवासस्तदाऽभवत् ॥

सापत्री शुद्धता से बनाया । ३२ ॥ सुमतीजी ने विधिवत् श्राद्ध करके ब्राह्मणों का भोजन कराया तब चन्द्रावती ने क्रोध करके ब्राह्मणों का जूठा उस रोज कुतिया को नहीं दिया ॥ ३३ ॥ फिर

का दिन पड़ा ॥ २८ ॥ उस दिन अग्रणी चन्द्रावती रज्जो से उसने कहा कि हे प्रिये आज
हमारे पिता की श्राद्धतिथि है ॥ २९ ॥ आज ब्राह्मणों की भोजन कराना है सो तू अन्धा २

वत्सरदिनं पितुर्मेचारुहासिनी ॥ २९ ॥ भोजनीयाद्विजाभी
रुपाकसिद्धिविधीयताम् ॥ तथाकृतापाकसिद्धिः सुमतेर्भर्तु
राज्ञया ॥ ३० ॥ मुक्तंपायसभाण्डैर्वैसर्पेणगरत्नंततः ।
दृष्ट्वा ब्रह्मवधान्नीताशुनीभाण्डानिसाऽस्पृशत् ॥ ३१ ॥

पकवान चना । सुशती की भासा पाकर चन्द्रावती ने सुन्दर पक्वान तैयार किया ॥ ३० ॥ उसी
समय जो शीर पात्र में रखी थी उसमें ऊपर से सर्प ने निप डगल दिया तब कृतिया ने देखा कि इस

का भया । हे युधिष्ठिर ! इस प्रकार वे दोनों अपने कर्म के वश हुए ॥२०॥ ऋतुसंपर्क दोष से पशु-
 योनि भोगते भये । परन्तु उन दोनों को अपने पूर्वजन्म का वृत्त और जाति का स्मरण था ॥२६॥ हे
 तथा ॥२६॥ सुतस्यैवगृहे राजन्स्मरन्तौ पूर्वपापकम् । सुमि-
 त्स्य च पुत्रोऽभूद् गुरुशुश्रूषणरतः ॥२७॥ सुमतिर्नाम धर्मज्ञो
 देवतातिथिपूजकः । अथक्षयाहे संप्राप्ते पितुस्तु सुमतिस्तदा
 ॥२८॥ भार्याचन्द्रवती प्राह सुमतिः श्रद्धयान्वितः । अद्यसां-
 राजन् ! वे दोनों अपने ही पुत्र के घर अपने पूर्वजन्म का स्मरण करते हुए जीवन भित्ति लगे ।
 सुमित्र का पुत्र जिसका नाम सुमती था वह अपने गुरु की सेवा में रहता था ॥ २७ ॥ सुमति
 देवता का पूजन और अतिथि का सत्कार करने वाला था । उसके पिता का क्षयाह (वार्षिक) श्राद्ध

जयश्री आर सुमित्र का ऋतु भई ॥ २२ ॥ नब हे युधिष्ठिर वह ब्राह्मण और ब्राह्मणी दोनों मने
 दंपती राजन्स्वकर्मवशागतदा ॥ २३ ॥ भार्यातरस्य जयश्रीः
 सा ऋतुसंपर्कदोषतः ॥ श्रुतियोनिमनुषासा सुभिन्नोऽपिनेर
 श्वर ॥ २४ ॥ तस्याः संपर्कदोषेण बलीवर्दावभवह ॥ एव
 तौ दम्पती राजन्स्वकर्मवशागतदा ॥ २५ ॥ ऋतुसंपर्कदोषेणा
 तिर्थायोनिसुपागतौ । स्वधर्माच्चरणज्जातावुभौ जातिरुत्तरौ

पर ऋतुसंपर्कदोष से अपने कर्मों के वश हो फिर जन्मे ॥ २३ ॥ और ऋतुसंपर्क से दूसरे जन्म में
 जयश्री का कुतिया का जन्म भया और सुमित्र अर्थात् उसके पति का ॥ २४ ॥ दूसरा जन्म बैल

एक समय वर्षा समय में गृहस्थी का काम अधिक करके थकी हुई वह चंचल मन वाली ॥२०॥

क्षेत्रादिषुरतासाध्वी व्याकुलीकृतमानसा ॥ २० ॥ एकदा
सात्मनः प्रासप्तुकालं व्यलोकयत् । रजस्वलाऽपिसाराज
न्गृहकर्मं चकारह ॥ २१ ॥ भाण्डादीन्यस्पृशद्भ्राजद्भ्रतौ
प्रासेपिभामिनी । कालेनबहुनासाध्वीपञ्चत्वमगमत्तादा
॥२२॥ तस्याभर्तापि विप्रोऽसौकालधर्ममुपेयिवान् । एवंतौ

उसी समय ऋतुवती हुई । वह ऋतु प्रास होने पर भी अपने घर का सब काम किया करती थी ॥२१॥
हे राजन् ! ऋतुकाल प्रास होने पर भी उसने भाण्डादिकों को स्पर्श किया । बहुत दिन बाद

करता था । उसके देश में वेद और वेदाङ्गों में प्रवीण सुमित्र नामक एक ब्राह्मण वास करता था ॥१७॥ हे

राजर्षिश्चतुर्वर्ग्यानुपालकः । तस्यदेशेऽवसद्विप्रो वेदवेदाङ्ग
पारगः ॥ १७ ॥ सुमित्रो नाम राजेन्द्र सर्वभूतहिते रतः । कृषि
वृत्या सदायुक्तः कुटुंबपरिपालकः ॥ १८ ॥ तस्य भार्यासु
साध्वी च पतिशुश्रूषणेरता । जयश्रीनाम विख्याता बहुभृत्य
सुहृज्जना ॥ १९ ॥ अतिचिंता निवृत्ता सा च प्रावृत्काले सुमध्यमा

राजन् सुमित्र ब्राह्मण अपने सब प्राणियों के सुखार्थ खेती धादि में लगा रहता था, कुटुम्ब पालन
करता था ॥१८॥ उसकी स्त्री जयश्री नामा बड़ी पतिव्रता थी किन्तु वरमें धनादि से दुखी थी १९॥

बाण्डाली, दूसरे दिन ब्रह्मघातिनी, तीसरे दिन धोबिन के समान और चौथे दिन शुद्ध होती है
 ॥१३॥ जान के अथवा अजान से स्पर्शास्पर्श का जो पाप है सो ऋषिपंचमी का व्रत करने से छूट
 पसंत्तयाथै वैकार्येयं ऋषिपंचमी ॥ १४ ॥ सर्वपापप्रशमनी
 सर्वोपद्रवनाशिनी । ब्रह्मत्तात्रियाविद्भूद्वैः स्त्रीभिः कार्या
 विशेषतः ॥ १५॥ अत्रार्थे यत्पुरावृत्तं प्रवक्ष्यामि कथानकम्
 पुराकृतयुगे राजाविदुर्भायां बभूवह ॥ १६॥ इयेनजिन्नाम
 जाता है ॥ १४ ॥ संपूर्ण पापों को दूर करने वाला और सब उपद्रव का नाश करने वाला ऋषिपं-
 चमी का व्रत चारों वर्णों की स्त्रियों करै ॥ १५ ॥ इसकी एक कथासतयुग की यह है कि विदुर्भ
 देश में एक राजा था ॥ १६ ॥ उसका नाम इयेनजित नाम राजर्षि था वह चारों वर्णों का पावन

जगह बाँट दिया ॥ १० ॥ पहिला भाग अग्नि की पहिली ज्वाला में, दूसरा नदी के पहिले
 बाँट में, तीसरा भाग पर्वत में और चौथा भाग स्त्रियों के रजोधर्म में छोड़ दिया ॥ ११ ॥ इससे चारो
 प्रथमोदके । पर्वतेषु च राजेन्द्र नारिरजसिपार्थिव ॥ ११ ॥
 अतो रजस्वलानारी प्रोत्सार्थांचप्रयत्नतः । ब्रह्मणः शासना
 त्पार्थ चातुर्वर्ण्येन सर्वदा ॥ १२ ॥ प्रथमेहनिचाण्डाली
 द्वितीये ब्रह्मघातकी । तृतीये रजकीप्रोक्ता चतुर्थेहनिद्रुध्यति
 ॥ १३ ॥ अज्ञानाज्ज्ञानतोवापि जातं संपर्कपातकम् । तत्पा
 वर्णकी रजस्वला स्त्री को छूने को ब्रह्मजी ने मना किया है ॥ १२ ॥ रजस्वला स्त्री पहिले दिन

समय में वृत्रासुरें राजस का जब इन्द्र ने बध किया तब उसे ब्रह्महत्या लगी ॥७॥ हे शुधिष्ठिर उस
 हत्या से दुखी होकर राजा इंद्र ब्रह्मा के पास गये और अपनी हत्या छुटाने की प्रार्थना
 तथा वैराजशादूलब्रीडितो वृतसूदनः । ब्रह्माणसमुपागच्छदा
 त्मनः शुद्धिकारणात् ॥ ८ ॥ ततो देवैः समं ब्रह्माक्षणांश्यानं
 चकार वै । शुद्धिंशक्रस्य राजेन्द्र प्रहृष्टेनान्तरात्मना ॥ ९ ॥
 विभज्य ब्रह्महत्यां तु चतुर्धा च चतुर्मुखः ॥ प्राक्षिप द्वाजशा
 दूलचतुःस्थानेषु वैतदा ॥ १० ॥ बन्हौ प्रथमज्वालामुखे नदीषु
 क्रिया ॥ ८ ॥ तब ब्रह्माजी ने ध्यान कर देखा और विचार किया कि देवेन्द्र की शुद्धि कैसे
 हानी चाहिये ॥ ९ ॥ ऐसा विचार करके ब्रह्महत्या का चार भाग कर दिया और उसको चार

के पापकर्म बत पड़ते हैं ऋषिपंचमी व्रत करने से किस प्रकार के पाप से स्त्रियाँ छुटती हैं ॥४॥
कृष्ण भगवान् बोले कि जो स्त्री गृहकार्य में लगी हुई राजस्वलावस्था में जानके अथवा अज्ञान

जाता राजस्वला ॥ दुष्टास्पृशाति भाण्डानि गृहकर्मणि संस्थिता
॥५॥ प्राप्नोति च महापापं सत्यं सा नरकं ब्रजेत् । शृणु तत्का
रणं अस्माद्ब्रजनीया राजस्वला ॥ ६ ॥ प्रोत्सार्था गृहतो दूरं
चातुर्वर्ष्येन भारत ॥ ब्रह्महत्यां पुराशक्नेवुं ब्रह्महत्यावापच ॥ ७ ॥

से भाण्डादिकों का स्पर्श करती है ॥५॥ वह इस पाप से नरकवास करती है राजस्वला के त्याग करने का
कारण सुनो ॥६॥ शरीरवर्णों की राजस्वला को गृहस्थी के कामों से अलग रहना चाहिए पहिले

हो जाता है ॥३॥ फिर युधिष्ठिर ने कहा कि हे कृष्ण वह पंचमी कौन है और ऋषिनामक क्यों

युधिष्ठिर उवाच ॥ कीदृशी पञ्चमी कृष्ण कथं च
 ऋषिसंज्ञिता । पातकान्मुच्यते कस्मान्नत्सर्वं कथ
 यस्व मे ॥ ३ ॥ पापानि च बहून्यत्रविद्यन्ते किल
 केशव । कथं वा ऋषिपञ्चम्यां नाशि कस्मात्प्रमु
 च्यते ॥४॥ कृष्णउवाच ॥ अज्ञानाज्ज्ञानतो वापि या स्त्री

हे और स्त्रियों के किस प्रकार के पापों का नाश होता है सो कहिये ॥३॥ हे केशव अनेक प्रकार

एक समय वन में शुधिष्ठिर ने श्रीकृष्णभगवान् से पूछा कि हे प्रभो मैंने बहुत से व्रत सुने

अथ भविष्योत्तरपुराणोक्त ऋषिपंचमीकथाप्रारम्भः ॥

शुधिष्ठिरउवाच ॥ श्रुत्वा नि देवदेवेशा व्रतानि सुबहूनि च ।

साम्प्रतं मेऽन्यदा चत्वं व्रतं पापप्रणाशनम् ॥ १ ॥ श्री

कृष्णउवाच ॥ अथान्यदपि राजेन्द्र पंचमीऋषिसंज्ञितम् ।

कथयिष्यामि यत्कृत्वा नारीपापात्प्रमुच्यते ॥ २ ॥

हे अब आपसे संपूर्ण पापों का नाश करने वाला व्रत सुनने की इच्छा है सो आप कहिये ॥ १ ॥

तब श्रीकृष्णजी बोले कि हे राजेन्द्र ऋषिपंचमी एक व्रत है जिसके करने से स्त्रियों का पाप नष्ट

से जो फल होता है सो सब इस ब्रत के करनेवाली स्त्री इस संसार में धन पुत्र रूप लाभप्रय
 आदि का सुख पूर्ण भोगती है ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ और परलोक में पद्मगति को प्राप्त होती है

३२

सर्वदानेषु यत्पुण्यं तदस्य ब्रतचारणात् ॥ ३३ ॥ कुरुते यन्नतं
 वैतस्नानरी सुखभागीनी ॥ रूपलावण्यसंयुक्ता पुत्रपौत्रादि
 संयुक्ता ॥ ३४ ॥ इह लोके सदैव स्यात्पुत्राप्यक्षयागतिः ॥ ब्रत
 स्यः स्य प्रभावेण जातिं स्मरति पौर्विकीम् ॥ ३५ ॥

इति हेमाद्रिब्रह्मण्डे ऋषिपञ्चमीकथा समाप्ता ॥

और इस ब्रत के प्रथम व से मनुष्य को पहिले जन्म की जाति का ज्ञान भी होता है ॥ ३३ ॥

इति हेमाद्रिऋषिपंचमीकथा समाप्ता ॥

कश्यप १ अत्रि २ भरद्वाज ३ विश्वामित्र ४ गौतम ५ जमदग्नि ६ वमिष्ठ ७ ये सप्तऋषि हे
 इनको अर्घ्य दे ॥ ३० ॥ मन में चिन्तना करे कि मर्घ्य ग्रहण करके मेरे ऊपर प्रसन्न होवे हे
 त्रिभरद्वाजो विश्वामित्रस्तु गौतमः ॥ जमदग्निर्वासिष्ठश्च सप्तै
 र्ऋषयः स्मृताः ॥ ३० ॥ गृह्णन्त्वर्घ्यमयादत्तं तुष्टं भवेत्तु मे सदा ॥
 श्रोतव्यमिदमाख्यानं शाकाहारं प्रकल्पयेत् ॥ ३१ ॥ स्थ्यातव्यं
 ब्रह्मचर्येण ऋषिध्यानपरायणः ॥ अनेन विधिनः सभ्य ब्रतमेत
 त्समाचरेत् ॥ ३२ ॥ तस्य तज्जायते पुण्यं सर्वतीर्थेषु यत्फलम् ॥
 सुशीले ! इस कथा को सुनकर शाकाहार करे ॥ ३१ ॥ ऋषियों के चरण का ध्यान करके सदानार
 से रहे इस प्रकार उत्तम गति से ब्रत करे ॥ ३२ ॥ तो संपूर्ण तीर्थों के काने से संपूर्ण दानादिक

उसी दिन तार्धनदी आदि मंत्रमान क्रम नियम सहित यज्ञशाला में जाकर ऋषियों का ॥२७॥
 यममेव च । विधाय नित्यकर्मणि गत्वा द्वारवतीसुधीन ॥२७॥
 स्नापयेद्विधिवद्भक्त्या पञ्चासुतरसैः शुभैः ॥ चन्दनाग
 रुकपूरैर्विलिप्य च सुगन्धिभिः ॥ पूजयेद्विधिवैः पुष्पगन्धधूप
 दिदीपकैः ॥ २८ ॥ समाच्छाद्य शुभैर्वस्त्रैः सोपवीतैर्यथाविधिः ॥
 ततो नैवेद्यसंपन्नमर्द्यं दद्याच्छुभैः फलैः ॥ २९ ॥ कश्यपो

विधि मं पूजन करै पंचामत से स्नान करावे चन्दन पुष्प धूप दीप आदि से अर्पण करे
 ॥२८॥ शुद्ध वस्त्र जनेऊ अनार आदि नैवेद्य कन्द ल फल पुष्पाज्जादि अर्पण करे ॥ २९॥

कथा कहिये ॥ ऋषिनी बोले ॥ हे सुशीले सम्पूर्ण जन को चित लगाने का सुन ॥ २४ ॥ जिस
के करने से शीघ्रही पाप से छुटकर स्त्रियाँ सौभाग्य को प्राप्त होती हैं ॥ २५ ॥ और कल्याण

तंकथयस्वमे ॥ ऋषिरुवाच ॥ सुशीले शृणु तत्सभ्यव्रताना
मुत्तमं व्रतम् ॥ २४ ॥ येन चीर्णेन सहसा पापाद्स्माल्पमुच्य
ते ॥ दुःखत्रयाद्विमुच्येत नारीसौभाग्यमाप्नुयात् ॥ २५ ॥ क
ल्याणानि विवर्द्धते संपदश्च निरापदः ॥ नभस्ये शुक्लपक्षे तु
यदाभवति पंचमी ॥ २६ ॥ नद्यादिषु तदा स्नात्वा कृत्वानि

की वृष्टि धन संपत्ति की प्राप्ति होती है ॥ भादों महीना में शुक्लपक्ष की जिस दिन पंचमी हो २६ ॥

इसका शार कीड़ों से पोहन हुआ है ॥ २१ ॥ हे प्रिये इसके दुःख का कारण जो था सो मैंने तेरे से कहा । तब फिर कन्या की माता सुशीला बोली कि जिस ब्रत

१०

कामिशामयीधुना ॥ २१ ॥ एतत्तेकथितं सर्वकारणंदुःखस्य
च ॥ सुशीलोवाच ॥ दर्शनादपि यस्यास्य विप्राणां निर्मलकुले
॥ २२ ॥ जन्मयुष्मद्विधानां हि जायते ब्रह्मतेजसाम् ॥ अबज्ञया
प्रजायन्ते निशथिकृमिराशयः ॥ २३ ॥ महाश्वयंकरं नाथतद्

के दर्शनमात्र से ब्राह्मणवंश में ॥ २२ ॥ आप सदृश तेजस्वी के यहां जन्म लिया उस ब्रत का
निरादार करने से सोती हुई कन्या का शरीर कीड़ों से भर गया ॥ २३ ॥ उस उत्तम ब्रतकी

प०

१०

पाप से इसके शीर में कीड़े पड़ गये हैं ॥ १८ ॥ रजस्वला नागि प्रथम दिन चाण्डाली दूसरे दिन ब्रह्मघातिनी ॥ १९ ॥ तीसरे दिन धोबिन के समान होती है चतुर्थ दिन शुद्धि तो प्राप्त होती

स्वलायाः पापेनयुक्ता भवति साऽन्धे ॥ प्रथमेहनि चाण्डाली
द्वितीये ब्रह्मघातिनी ॥ १९ ॥ तृतीये रजकी प्रोक्ता चतुर्थेऽहनि
शुभ्याति ॥ तदा तथा सर्वासिद्धाद्दुतं दृष्ट्वाऽभमानितम् ॥ २० ॥
दृष्ट्वा प्रभावेण जातः द्विजकुलेऽमले ॥ श्रवमानाद्दत्तस्यास्य

हे अपनी सखियों को ब्रत काने देव काने भी इसको बिनार एव श्रद्धा नहीं भई ॥ २० ॥
अतः ब्राह्मण देखने से इसका उत्तम ब्रह्मकुल में जन्म भया ॥ परन्तु ब्रत के निरादा से

हे सो कृपाकारके कहिये ॥१५॥ महर्षि ने इस वाक्य को सुनके ध्यान कारके विचार किया ॥१६॥
 तब मालूप भया कि पूर्वजन्मानित पाप है, सातवें जन्म में यह ब्राह्मणी थी ॥ १७ ॥ रजस्वला
 निशीथसंप्रसुप्तेय जायते कुमिसंकुलाः ॥ एतच्छ्रुत्वात्ततो
 वाक्यमापध्यानिपरायणः ॥१६॥ ज्ञात्वानिवेदयामास तस्याः
 प्राजन्मचेष्टितम् ॥ ऋषिरुवाच ॥ प्रागियं सप्तमेऽजनिजन्मानि
 ब्राह्मणीह्यभूत् ॥ १७ ॥ रजस्वला च संजाताभाण्डादीन्यस्पृशा
 तदा ॥ अस्थारतुषामनतिन जायतेकुमिवदुपुः ॥१८॥ रज

धर्म के समय इसने वाका सब सामान छूने का विचार नहीं किया और संपूर्ण स्पर्श किया उसी

के पास जल्दी से गई उसकी कीड़ों से गमन देवकर बड़ा बिलाप
पीटनी हुई मूर्च्छित हां गई, जब उनको हाथ गमन तब पुत्री को उठा कर

रुदीनिम्न ॥१२॥ साभान्तमनसाशीघ्रतर

सातां तथाविधांद्दष्टाविललापसुदुःखिता ॥१३॥ उरश्चताड

यामाससुतरांमोहमापच ॥ क्षणेन चेतनां प्राप्यतामुत्थाप्य

प्रसूज्यच ॥१४॥ समात्सव्य च बाहुभ्यामित्येतरिपतुरन्ति

कम् । स्वामिन्कथयमे साध्वीकेनदुष्कृतकर्मणा ॥ १५ ॥

पास हाथ पकड़ के ले गई और उनसे पूछा कि हे स्वामिन् किस पाप से इसकी ऐसी दशा होगई

शशि में शयन करन पर उस कन्या के सर्वांग में कीड़े पड़ गये तब वह दुःखी वस्त्रहीन एक पत्थर
 पर धी धी ॥ १० ॥ उसके पिता के शिष्य लोग उस को देखके उसकी माता के पास गये और
 यत ॥ तथा विधांचतां दृष्ट्वा विवस्त्रां प्रस्तरस्थिताम् ॥ १० ॥
 शिष्यानि वेदयामासुस्तन्मातुः करुणान्विताः ॥ नजानीमाव
 यं किंचिद्देविसाध्वीं तथा विधाम् ॥ ११ ॥ क्वमिराशिमयीजाता
 मातः सम्पति दृश्यते ॥ वज्रपाच्छदृशं वाक्यं श्रुत्वा शिष्यै

कही करुणा से बरने लगे कि हे माता किस कारण साध्वी की ऐसी दशा होगई ॥ ११ ॥ इसका
 सर्वांग बीड़ों का ढेर हो गया है । इनके ऐसे दुःखः दई बचनों को सुनके माता विकल होकर कन्या

से कर दिया था भाग्यवशा वह कन्या वैधव्य को प्राप्त भई । तब वह कन्या अपने पिता के यहाँ
 विवाहितवैसा देवाद्देवव्यं प्राप सत्तम ॥ ६ ॥ सतीत्वंपाल
 यन्तीसिआह्वे निजपितुर्गृहे ॥ तस्यादुःखेनसंतपतः भुतंसं
 स्थाप्य वैशमनि ॥ ७ ॥ गंगारिवनं प्राप्तो सकलत्रस्तयासह ॥
 सतत्राध्यापयामास शिष्यान्वेदं द्विजोत्तमः ॥ ८ ॥ सुताच
 कुरुते तस्य पितुः शुश्रूषणं परम ॥ पितुः शुश्रूषणं कृत्वापरि
 श्रान्ताकदाचन ॥ ९ ॥ निशीथेकिलसंसुसाकामिराशिरजा

यह कर धर्म । नवह करने लगी । पिता की सेवा गृहस्थी का काम करके थक कर एक समय ६ ॥

से न देही नाक को कदापि नहीं प्राप्त होती है, इसकी एक प्राचीन कथा है सो भी कहते हैं ॥३॥
 विदर्भ देशवासी उत्तक नामक एक ब्राह्मण सर्वगुण संपन्न था, उसकी स्त्री सुशीला नाम से विरथात
 तिहासं पुरातनम् ॥३॥ वैदर्भैचाद्विजवर उत्तंकोनामनामतः ॥
 तस्यभार्यासुशीलैतिपतिव्रतपरायणा ॥ ४ ॥ तस्याअपत्य
 युगलं पुत्रोहिसुविभूषणः ॥ अधीतवान्सुतस्तस्य वेदान्साङ्ग
 पदकमान् ॥ ५ ॥ समानेच कुलेतेन सुताचापि विवाहिता ॥

बड़ी पतिव्रता थी ॥ उसको दो सन्तति थी, एक पुत्र सुविभूषण नाम का था जो वेदशास्त्र पढ़ता था
 और एक कन्या थी जिसका विवाह उत्तक न एक उत्तम कुल के विद्वान् ब्राह्मण के सुन्दर कुमार

अथ कथाप्रारंभः ॥ सितेश्वर नामक राजा ने ब्रह्मानी से कहा कि हे ब्रह्मन् मैंने अपने क ब्रत-
माहात्म्य सुना है अब श्रीमुख से सब प्रकार के पापों का नाश करनेवाला ब्रतमाहात्म्य सुनने

अथ कथाप्रारम्भः ॥ सितेश्वर उवाच ॥ श्रुतानि देव देवेश
ब्रतानि सुबहूनि च । साम्प्रतं मे समाचक्ष्व ब्रतं पापप्रणाशनम्
॥ १ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ शृणु राजन् प्रवक्ष्यामि ब्रतानामुत्तमम्
ब्रतम् ॥ ऋषिपञ्चमीति विख्यातं सर्वपापहरं परम् ॥ २ ॥

येन चार्णो न राजेन्द्र नरकं नैव पश्यति ॥ अत्रैवोदाहरन्तीमामि-
की इच्छा है ॥ १ ॥ ब्रह्मा न कहा कि हे राजन् ब्रतों में श्रेष्ठ पापों का नाश करनेवाला ऋषि
ऋषिपंचमी का ब्रत है सो तुम्हारे स्नेह से कहते हैं सुनो ॥ २ ॥ हे राजेश्वर ऋषिपंचमी ब्रत करने

से दक्षिणा चदाना । यानि से (प्रदक्षिणा) फेरा करना ॥ नमोस्तु० मंत्र से नमस्कार करना एतेष्वर्प० से प्रार्थना करना । वायनदानका सङ्कल्प कर अवाहनकरे और ऋग्यजुःमन्त्रसे ब्राह्मण वायनदानविधिः॥ न्यनातिरिक्तकर्माणिमयायानि कृतानि च ।
 क्षमध्वं तानि सर्वाणि यथं सर्वतपोधनाः ॥ यान्तु देवगणाः सर्वे पु
 जामादाय मामर्कामि ॥ इष्टकामासमृध्यर्थं ॥ पुनरागमनाय च ॥
 एवं संपुज्य विधिना भक्ति युक्तेन चेतसा ॥ तेषामग्रे च श्रोतव्यं
 शुभंचैव कथानकम् ॥ इति पूजा विधिः ॥

पूजन करै । फल धन पक्वान्न दक्षिणा समेत वायन ब्राह्मण को दे लिखे मंत्रों से प्रार्थना करै । फिर ऋथा सुनके कर्पूर आर्ति करके यान्तु देव० मंत्र से विसर्जन करदे ॥ इति पूजाविधिः ॥

क्रि ३ आचमनी जल गिरावना । आचमन और पान करने के बाद हाथ धोने को जलदे नमो
 एतेसत्तर्षयः सर्वभक्त्यासंपूजितामया ॥ सर्वपापं ह्यपोहन्तु ज्ञा
 नतोऽज्ञानतः कृतम् ॥ प्रार्थयेत् ॥ अथवायनम् ॥ कृतायाः पूजा
 याः सांगतासिध्यर्थं ब्राह्मणाय वायनं दातु ॥ तथा ब्राह्मणपूज
 नं करिष्ये ॥ वायनं फलसंयुक्तं सद्युतं दक्षिणा निवतम् ॥ द्विजब
 यार्थदास्यामि ब्रूतसंपूर्तं हेतवे ॥ भवन्तः प्रतिगृह्णन्तु ज्योतिरू
 पास्ते पाथनाः ॥ उभयोस्तारकाः सन्तु वायनस्य प्रदानतः ॥ इति
 वेद० मंत्र से फल समर्पण करना । पूर्णफल० मंत्र से ज्ञान सुपरी बढ़ाना ॥ हिरण्यगर्भ० इस मंत्र

शु०

५

शुभ्राक्षताक्ष० मंत्र से अक्षत चढ़ावै ॥ मालती चंपकारि० मंत्रसे फूत्त चढ़ावै ॥ वनस्पति० मंत्र
 व्यंनगवल्लिदत्तैर्युतम ॥ कपूरैणसमायुक्तं ताम्बूलंप्रतिगृह्यता
 मत्ताम्बूलंस० ॥ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजांबिभावसोः ॥ अन
 न्तपुण्यफलदमतः शान्तिप्रयच्छमे ॥ दक्षिणांस० ॥ यानिका
 निचपापानिब्रह्महत्यासमानिच । तानिसर्वाणिनश्यंति प्रदक्षि
 णापदेपदे ॥ प्रदक्षिणांस० ॥ नमोस्तु ऋषिबुन्देभ्यो देवाधिभ्यो नि
 म्ने नमः ॥ सर्वपापहरेभ्यो हि वेदाविद्भ्यो निमो नमः ॥ नमस्कारः ॥
 से भूपतिं करना ॥ साज्यं च० मंत्र से दीपतिं करना । नाना पक्वान्न० मंत्र से नैवेद्य लगावना ।

इससे पंचा तस्मान करावे । मन्दाकिनि० मंत्र से जल से स्नान करावे ॥ सर्व नित्यं० मंत्र से
 जितंमया ॥ दीपंगुहाणादेवेद्यात्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥ दीपम् ॥
 नानापक्वान्नसंयुक्तंरसैःषड्भिःसमन्वितम् ॥ गृह्णन्तुऋषयः
 सर्वमयानैवेद्यमर्पितम् ॥ नैवेद्यांक्षमर्पयामि ॥ मध्येपानीयम
 स० ॥ उत्तरापोषणस० ॥ हस्तप्रक्षालनं० ॥ करोद्धर्तनार्थेचन्दनं
 स० ॥ नमोवेदविदःश्रेष्ठाऋषयःसूर्यसन्निभाः ॥ गृह्यांतिवदंफलं
 तुष्टामयादत्तं हि भक्तिवः ॥ फलंसमर्पयामि ॥ पूगीफलंमहद्दि
 वस्य चद्रावौ ॥ नाना मन्त्रः० इस मंत्र से यज्ञोपवीत चद्रावौ ॥ कुंकुमागुरु० मंत्र से चन्दन चद्रावौ ॥

शुभयजुः मन्त्र से आसन दे । गन्धपुष्पाक्षतैः मंत्र से पार्थाय चढ़ावै ॥ नमस्ये शुभल्ल०

शु०

४

चंदनंदिव्यंगुह्वन्तु ऋषिसत्तमाः ॥ गन्धम् ॥ शुभाक्षताश्च सं
पुण्याः प्रक्षाल्य च नियोजिताः ॥ शोभायैवो मया दत्ता गुह्वन्तां
मुनिसत्तमाः ॥ अक्षताः ॥ सालतीचंपकादीनि तुलस्यादीनि वै
द्विजाः ॥ मया हृता निपुण्याणि पूजायै प्रतिगृह्यताम् ॥ पुण्याणि
वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यः सुमनोहरः ॥ आग्नेयः सर्वदेवानां
धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ धूपम् ॥ साज्यं च वर्तिसयुक्तं वाहिनायौ
इससे गन्धादिसहित जल अर्घ्य चढ़ावै । लोकानां० इस मंत्र से आचमन करावै । पयोदधि०

४

करै कराड़ा सूर्य के समान तेजस्वी जटावत्कल धारण किये भस्म लगाये कुशा कर्मण्डल हाथ में लिये
 सत्तमाः ॥ पंचामृतम् ॥ मन्दकिनी गोमती च यमुना च सरस्व
 ती । कुरुणा च नर्मदा तापी ताभ्यः स्नानार्थमाहृतम् ॥ स्नानम् ॥
 सर्वोत्थितपोनिष्ठा ब्रह्मज्ञाः सत्यवादिनः ॥ वस्त्राणि प्रातिगृह्ण
 न्तु मुक्तिदाः सन्तु मे सदा ॥ वस्त्राणि ॥ नानामन्त्रैः समुद्भूतं त्रि
 ब्रह्मसूत्रकम् ॥ प्रत्येकं च प्रयच्छामि ऋषयः प्रतिगृह्यताम् ॥
 उपवीतानि ॥ कुंकुमागुरुकपूरसुगन्धैर्मिश्रितं शुभम् ॥ गंधाह्वं

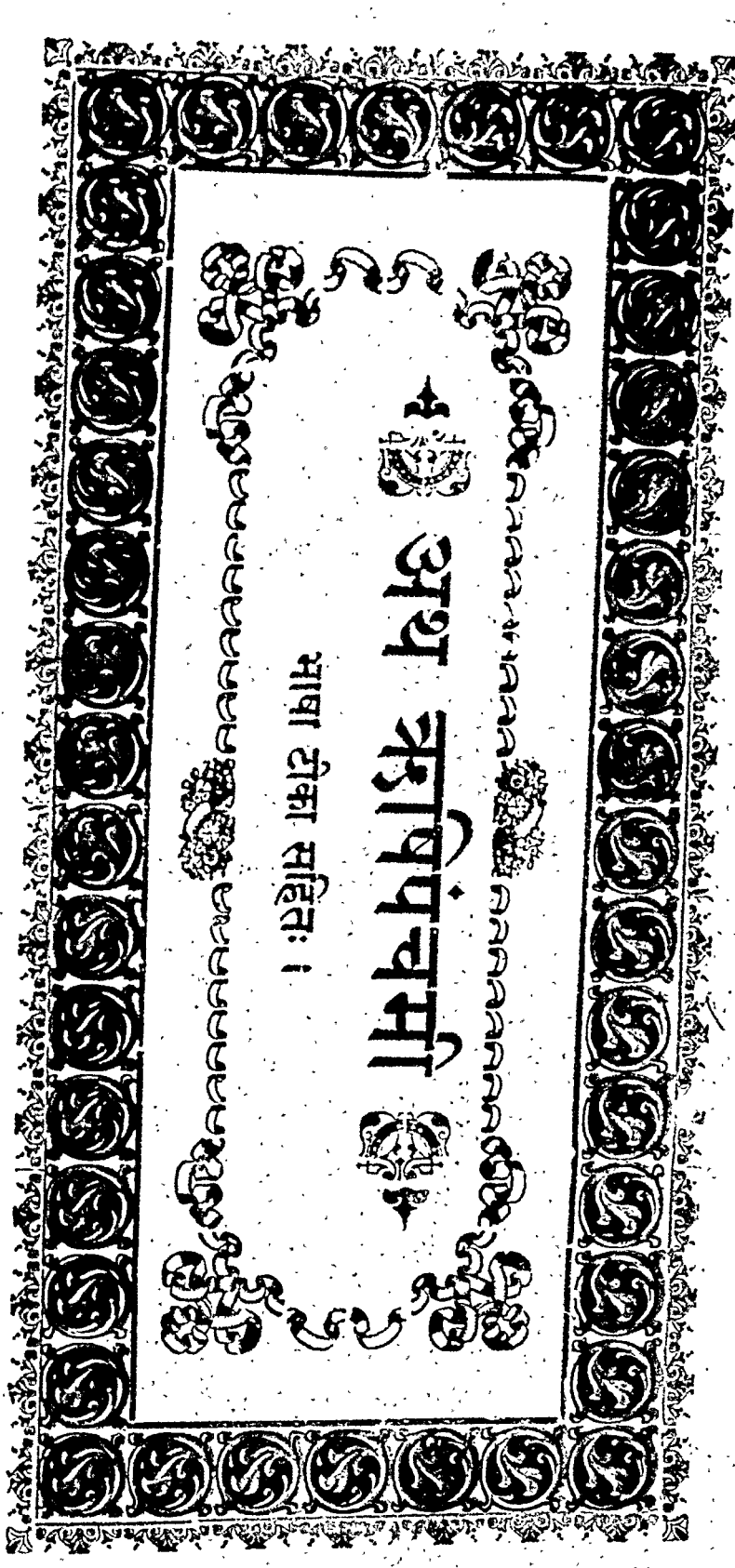
अरुन्धी परम सती सत्यवती सहित ऋषिबन्ध का चिन्तन करै प्रागच्छन्तु ० इस मंत्र से ज्ञावाहन करके

पात्र को बलश पर रखके कुश के सप्त ऋषि और अरुन्धती जी की स्थापना करना कि संकल्प

गन्धपुष्पाक्षतैर्धुक्तं पाद्यं गृह्णन्तु भो द्विजाः ॥ प्रसादं कुरुत प्रीता
स्तुष्टाः सन्तु सदा मम ॥ इ० पाद्यम् ॥ नभस्येशुक्लपंचम्यां अ
र्चिता ऋषिसत्तमाः ॥ दहन्तु पापं सर्वं मे गृह्णन्त्वदर्थं नमोनमः ॥
इ० अर्घ्यम् ॥ लोकानां तुष्टिकर्तारो यथं सर्वत पाथनाः ॥ नमो धो
धर्मविज्ञेभ्यो महर्षिभ्यो नमोनमः ॥ इ० आचमनम् । पयोदाधि
द्युतंचैव शर्करामधुसंयुतम् ॥ पंचामृतेन स्नपनं करिष्ये ऋषि
करके विधिवत् पूजन आवाहन करे ॥ अथ पूजाविधिः ॥ हाथ में फूल लेकर ऋषियों का ध्यान

अवीर से अष्टदल बनाय के जलपुरित तामे के कलश में केसर पंचरत्न पंचपल्लव ब्योड के वस्त्र
 न्यतीसाहितकश्यपादिसत्तर्षिप्रीत्यर्थं सत्तर्षिपूजनमहमाच
 रित्ये ॥ मूर्तब्रह्मराधदेवस्य ब्रह्मणस्तेज उत्तमम् । सूर्यकोटिप्र
 तीकाशं ऋषिबृन्दं विचिन्तये ॥ इति ध्यानम् ॥ आगच्छन्तु म
 हाभागाश्चतुर्वेदपरायणाः । यावद्भ्रतमिदं कुर्वे कृपया भवताम
 हम् ॥ इत्यावाहनम् ॥ ऋग्यजुः सामेवदानां स्वरूपेभ्यो नमो
 नमः । पुराणपुरुषेभ्यो हि देवर्षिभ्यो नमो नमः ॥ इत्यासनदानम् ॥

कलश के गले में लपेट कर ऊपर १ चौड़ी रिकामी में श्वेत वस्त्र विधाय के अष्टदल बनाना उस



अथ ऋषिपंचमी

भाषा टीका सहितः ।

